ओम शांति,

आज हम सभी एक बहोत अच्छे विषय पर खुद से बात करेंगे और वोह विषय है संगमयुग पर हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए। हम सभी जानते है बहोत सुंदर समय हमारे हाथों में आया है भाग्यवान आत्माओ को ही यह समय मिला है जब कि स्वयं भगवान् हमारे सामने सम्पूर्ण सत्य अनेक गुह्य रहष्य स्पस्ट कर रहे है और उसमें भाग्य बनाने कि कलम भी हमारे हाथ में दे दी है, आयी है सभी के हाथ में यह कलम या नहीं? ऐसा तो नहीं दुसरो को दे दी है? बहोत अच्छा अवसर बाबा साकार में तो कहा करते थे मुझे वोह बात बहोत याद रहती है - **बच्चे अपने भाग्य को देखो भगवान् तुम्हारी मुट्ठी में आगया है, ब्रह्मा बाबा का अपना नशा भी था यह** लास्ट इयर के रात्रि क्लास के महावाक्य है यह। रात्रि क्लास क्यूंकि सुनाई नहीं जाती आजकल शुरू में बहोत सुनाई जाती थी बहोत सुंदर बातें होती थी उसमें भी लगता ऐसा था कि ब्रह्मा बाबा जो कि अपनी सम्पूर्ण स्थिति में थे ६८ में उनके नशे कि, उनकी स्थिति कि, उनकी साधनाओ कि बातें उस में आ गयी है। हमें सायद सुन के लगता हो कि बाबा उन्ही हमें नशा चढ़ा ने के लिए केह देते है पर सत्य येही है भगवान् हमारे हाथ में है वोह हमारा हो गया है। इस बात पर सभी बहोत अच्छी तरह विचार करें हमारा है वोह एक शब्द और जोड़ लिया करें हमारे लिए है बहोत बड़ा सुख हमें इस संगमयुग पर मिल रहा है, सब ने वोह सुख अनुभव किया है उसका स्वाद चखा है।

पहली बहोत सुंदर चीज है येही के **हम अपने जीवन का लक्ष्य बना लें ८४ जन्म हमने भिन्न भिन्न रसो में, भिन्न भिन्न सुखो का सीधा या उल्टा अनुभव करते हुए व्यतीत किया है अब केवल ईश्वरीय सुख लेना है।** सभी यह अपने से चिंतन करके देखें ना ऐसा समय आएगा दोबारा, ना ऐसा विधि का हमें ज्ञान होगा, ढूंढते रहेंगे, पुकारते रहेंगे, तलाश रहेगी। अभी ईश्वरीय सुख बरस रहा है जैसे अमृत बरस रहा है ईश्वरीय सुख बरस रहा है, सभी लें इसे बहोत अच्छी तरह। सवेरे से ही यह सुख बरसने लगता है आँख खुलते ही कौन मिलता है हमें? यह सोचकर ही मन आनंदित हो जाता है। जो गीत था डूबा रहता है ना दिल, मन? मनुष्य तो जब सवेरे आँख खोलते है रोज सवेरे तो फिरसे समस्यायों के भूत उनके सामने खड़े होते है, आज फिर यह समस्या। और हम जब आँख खोलते है तो? स्वयं वरदाता वरदानी हाथ हमारे सर पर रख देता है सरे बोज हर लेता है, लक्ष्य बना लें संगमयुग केवल ईश्वरीय सुख प्राप्त करने के लिए है जो चीजे हमारे इस सुख में बाधा डालती है उन्हें छोड़ देना है। येही सूक्ष्म त्याग है। इस सूक्ष्म त्याग को हर आत्मा स्वयं ही समज सकती है कोई दूसरा नहीं इसकी चर्चाएं भी नहीं हो सकती, बातें सुनली कुछ व्यर्थ कि सुख चला गया, कुछ सोच लिया ऐसे सोच लिया अनुमान हो गया सुख चला गया और तरफ ध्यान चला गया सुख चला गया। कल कि मुरली याद हो क्यूंकि तुम भिन्न भिन्न रसो में रहते हो इसलिए स्थिति भी अलग अलग तरह कि रहती है, भिन्न भिन्न रहती है एक रस में आजाओ, एक के रस में आजाओ स्थिति एकरस हो जायेगी। **कोई भी रस आत्मा को खिंच ने लगा चाहे वोह खाने का रस हो, चाहे आजकल टीवी देखने का रस हो, चाहे इधर उधर कि किताबे पढ़ने का रस हो, बोलने का रस हो तो ईश्वरीय रस चला गया।**

हम लक्ष्य बनाएं येही सभी रस तो जन्म जन्म मिलते रहेंगे कोई कमी नहीं रहेगी, दो युग तो हमारे ऐसे बीतेंगे सभी रसों में भरपूर जिनको सांसारिक सुख लोग कहें उनमें भी संपन्न। इतने सुख कि जहाँ कोई इच्छा ही नहीं बचती अब केवल ईश्वरीय सुख, बोलो तैयार है इसके लिए सभी? सोच लें सभी माताएं तैयार है? यह सुख दुबारा नहीं मिलेगा और जिसने यह सुख इकट्ठा कर लिया होगा क्या होगा उसे? वोह दुसरो के दुःख हर सकेंगे। तो में आप सभी को एक महान लक्सख्य कि याद दिलाना चाहता हूँ जिसे में भी बहोत याद करता हूँ और वोह महान लक्ष्य यह है कि हम जिस महाविनाश के काल में प्रवेश कर रहे है जहाँ दुःख ही दुःख होगा, जहाँ विज्ञान के मेडिकल के सभी साधन फ़ैल हो जायेंगे। हमें सभी के दुःख हरने होंगे, हमें देना होगा संसार को बहोत कुछ संसार कि सभी आत्माएं प्यारी नजरो से

हमारी और देखेंगी यदि हम उन्हें ना दे पाएं तो हमें बहोत बहोत बुरा फिल होगा, निरसा हो जायेगी कि संसार को हम दे नहीं पाएं। सभी यह महान लक्ष्य को साथ ले लें मुझे विनाशकाल में आने वाले समय में ऐसा स्वयं को तैयार करना है अभी से कि विनाशकाल में सब को सुख दे सकें, तृप्त कर सकें। विनाश छोटी घटना नहीं होगी, अति अति भयानक घटना जिसके लिए बाबा कहते है उसे देखना भी बहोत शक्तिशाली आत्मा का काम होगा, जिसे देखा भी नहीं जा सकेगा अगर हमें उससे गुजरना पड़ेगा तो हमारी मनोस्थिति कैसी रहेगी? अपने को भी तैयार करना है और देने के लिए भी तैयार करना है। देखने के लिए भी और देने के लिए भी।

तो ईश्वरीय सुखों से हमें स्वयं को भरना है संगमयुग दूसरी बात पर आजायें भाग्य बनाने का सुंदर काल है। सभी विचार करें हम कैसे कैसे अपने भाग्य का निर्माण करें, बाबा इस सीजन कि मुरलियों में भी दो बार एक चीज केह आयें तिन तरीके है जमा करने, याद है? स्व के पुरषार्थ के द्वारा, दूसरा- दुआएं देना। मिल तो स्वतः ही जायेगी दुआएं देना और उसका तरीका बताया संतुष्ट रहना और संतुष्ट करना। तीसरा तरीका है पुण्य कर्म जमा करना, निस्वार्थ भाव से सेवा करना, निस्काम भाव से सेवा करना, स्वमान में रेह कर सेवा करना, श्रेस्ठ भाव और भावनाओ से सेवा करना इससे पुण्य का खाता जमा होता है।

तो **बाबा ने तो हम सब को यज्ञ रच कर हाथ में दे दिया है ना? इस यज्ञ से तुम अपना पुण्य भी जमा करो और संसार का भी कल्याण करो।** गीता में भी बहोत अच्छी बात है प्रजापिता ब्रह्मा ने यज्ञ रच कर ब्रह्मणो से कहा है वत्स तुम इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करो देवता तुम्हे मन इच्छित फल प्रदान करेंगे। शिवबाबा ने और प्रजापिता ब्रह्मा ने यज्ञ रच कर हमारे हाथ में दे दिया इससे तुम अपना कल्याण करो, दुसरो का कल्याण करो, इससे तुम अपने भाग्य का निर्माण करो दुसरो के भाग्य का निर्माण करो। इससे ही तुम सब कुछ प्राप्त कर सकते हो, मन इच्छित फल प्राप्त कर सकते हो मुरलियां चली है बाबा कि में देखा बहोत दिन से वोह मुरली आयी ही नहीं है रिपीट होकर इसमें भी यज्ञ सेवा और यज्ञ कि सम्भाल करना जो भूलते जा रहे है यज्ञ के महत्व को हमें भूलना नहीं है यह यज्ञ एक महान कर्तव्य के लिए रचा गया है ना? **इससे एक और विनाश ज्वाला प्रगट होगी दूसरी और सारे संसार के विकारो कि, पापो कि आहुति उस में पड़ जायेगी दोनों काम हम सब को करने है।**

तो भाग्य बनाने के लिए देखिये भगवान् ने यज्ञ रच कर हमें दिया भाग्य बनाओ, सेवा करो तुम्हारा कुछ भी नहीं जा रहा है, करो इसमें निस्वार्थ सेवा और भाग्य का निर्माण करो। यह भावनाएं धान दे सभी भावनाओ पर यदपि यह भक्ति का शब्द है लेकिन यह ना भक्ति का ना ज्ञान का यह तो एक नेचुरल चीज है हर मनुष्य के साथ। डॉकटर में भी भावना होगी तो दवाई काम करेगी, भक्ति में हम देखते आयें सभी किसी पत्थर कि मूर्ति में भावना है तो भावना से फल मिल रहा है। यज्ञ सेवा हम अच्छी भावना से करें आप को झाड़ू लगाने कि सेवा मिल गई झाड़ू तो घर में भी लगया जाता है लेकिन बहोत प्यार और भावना से झाड़ू लगाना वोह भाग्य निर्माण करने वाला हो जाता है। हर तरह कि यज्ञ सेवा, सेवा तो सेवा होती है उसमें बड़ा छोटा नहीं होता। भाई यह सेवा बड़ी है यह छोटी है सेवा भाव हो जाए तो यह बड़े और छोटेपन कि भावना भी समाप्त हो जाती है।

हम पुण्य का खाता जमा करते चलें। **दुसरो को सुख देने से पुण्य बढ़ता है सोचलें सभी ८४ जन्मो के लिए ही श्रेस्ठ भाग्य का निर्माण कर लेना है। केवल २१ जन्म के लिए नहीं क्यूंकि जो संस्कार हम यहाँ अपना लेंगे वोह हमारे द्वापर से भी चालू रहेंगे।** अगर हमने यहाँ स्वयं को संतुष्ट कर लिया तो हम जन्म जन्म संतुष्ट रहेंगे, अगर हमने यहाँ सब को संतुष्ट करना सिख लिया तो हम जन्म जन्मा संतुष्ट करेंगे। आप सभी ने जिस में आपमेसे राजाओ के बारें में कुछ जाना हो, द्वापरयुग में भी राजाओ को यह लक्ष्य रहता था हमारी प्रजा सम्पूर्ण सुखी हो, हमारे राज में कोई व्यक्ति रोता ना हो, ऐसा तो नहीं किसी को ताले लगाने पड़ रहे है ऐसा तो नहीं कोई भूखा सो गया है। यह थे सब

के पालना के संस्कार इसलिए राजा को मातपिता माना जाता था अब के राजाओ के पास तो वोह है ही नहीं। वोह संस्कार हम सभी यहीं भरते है, वोह हम में से ही है आत्माएं जिन्होंने द्वापरयुग से भी राज किया है इसलिए जो संस्कार पालना के, सुख देने के, दुसरो कि केअर करने के, दुसरो के दुखो के लिए स्वयं भी दुःख उठा लेने के यह संस्कार है यह महान संस्कार है। अभी यदि हम अपनाएंगे तो जन्म जन्म हमारे साथ चलेंगे।

अभी हम ट्रैन से आ रहे थे एक ज्ञानी परिवार था, बहोत सारे ज्ञानी भी मेरठ से चढ़े उनका यहाँ आबू में मिलन है कुछ बहोत सारे आ रहे थे। तो किसी परिवार ने उनसे कहा कि भाई तुम हमारी सीट ले लो हम परिवार है यहाँ रेह जायेंगे हमारी सीट वहाँ है। ले ली बिचारो ने रात को वोह तो उतर गये और दूसरे आ गये कि भाई यह सीट तो हमारी है अब वोह उठे थोडा गुस्सा आ रहा उनको हमें भी उठना पड़ा हमसे बदल ली थी किसी ने। हम दे देते है कि भाई परिवार है आपस में रेह जाएँ हम तो अकेले है कहीं भी सो जायेंगे। मेने उसको कहा कि **दुसरो को सुख देने के लिए यदि थोडा कष्ट उठाना पड़े तो कोई हर्जा नहीं है** खुश हो गया वोह। बुजुर्ग था कहे भाई यह बात बड़ी काम कि कही है बस सो गया आराम से नहीं तो कितने संकल्प चला देते, इसने किया उसने किया, यह किया। हम संस्कार भरें अपने अंदर पालना के, जो पालना के संस्कार यहाँ भरेंगे दुसरो का ध्यान देना। अब एक कमरे में भी तो सोती है ना सेवाधारी बहने? जो दुसरो का ध्यान रखते है यह संस्कार बहोत महान है, कुछ लोग दुसरो का ध्यान नहीं रखते रात को लेट भी आयेंगे तो लाइट जला देंगे, हमें तो चाहिए ना कपडे बदलने है, मुरली पढ़ेंगे हम तो। तुम भले ही सब जग जाओ, स्वार्थ यह हो गया ना यह? मुरली तो बहार भी पढ़ी जा सकती है, कुछ लोग अँधेरे में ही कपडे बदल के सो जाते है।

दुसरो का ध्यान रखना यह एक बहोत सुंदर महानता का संस्कार है। सभी माताएं भाई बहने ध्यान दें जो दुसरो का ध्यान रखेंगे, दुसरो कि पालना करेंगे, दूसरे कि केअर करेंगे यह राजाई संस्कार है उन्हें वही प्राप्त होगा। जो पहले अपना ध्यान रखेंगे यह स्वार्थ के संस्कार है उन्हें निचे जाना पड़ेगा, जो यहाँ अपना ध्यान रखेंगे वहाँ दुसरो को उनका ध्यान रखना पड़ेगा, जो यहाँ सब का ध्यान रखेंगे वहाँ सब उनका ध्यान रखेंगे और वोह सब के पालक बन जायेंगे, पालन हार बन जायेंगे। ऐसा महान भाग्य बनाने का समय हमारे सामने है, चेक करें आप अपने संस्कारो को विशेष रूप से ध्यान दें। संसार में चारो और हम देख सकते है, अपने को भी देख सकते है इस संसार में अनेक लोग केवल अपने संस्कारो से दुखी है, और दोष दे रहे है यह हमसे ऐसा करते है, यह हमसे ऐसा करते है, इन्होने गड़बड़ कर दी, इन्होने हमें धोखा दिया पर सत्यता यह है मनुष्य अपने ही संस्कारो से दुखी है। सुखी होना है तो स्वयं होना है अपने सुख कि भाग डोर यदि दूसरे को दे दी तो हम कभी सुखी नहीं हो पाएंगे, थिक है यह बात?

दुखी मनुष्य अपने संस्कारो से है। मुझे कई बुजुर्ग माताएं दिख रही है जब में बुजुर्ग माताओं को देखता हूँ तो कई माताएं मुझे याद आ जाती है जो सोच सोच कर दुखी है। मेरी बहु मेरे बारें में यह यह सोचती है, देखो वोह उसके संकल्पो को भी चेक कर रही है। मेरा फलाना लड़का मेरे से ऐसा ऐसा कर रहा है, अपने संस्कार ज्यादा सोचने के, कड़वा बोलने के, दुसरो कष्ट देने के, दुसरो कि निंदा करने के यह स्वयं के लिए कष्ट दाई है। बहोत लोगो को आप देख सकते है जो लोग दुसरो कि बहोत ग्लानि करते है, अगर कोई उनकी ग्लानि कर दें तो सहन नहीं होता। वोह दुसरो को बहोत कड़वा बोलते है उन्हें कोई कड़वा बोल दें सहन नहीं होता क्यूंकि उनकी सारी शक्ति उसमें नष्ट हो जाती है।

हंसी कि बात में सुनाया करता हूँ एक माताजी बहोत पूछा करती थी अब तो शारीर छोड़ दिया, एक दिन उसको किसी ने जरा जोर से बोल दिया तो वोह डर गई। कहा देखो भाई मेरे से प्यार से बात करो सब इतने हँसे उनकी बात सुनके कि जिसने जिंदगी भर किसी से प्यार से बात नहीं किया वोह भी कामना करती है दूसरे मेरे से प्यार से बात करें। तो हम सभी संगमयुग पर सुख पाने के लिए अपने संस्कारों को सॉफ्ट करें। यह जो कटुता लादी है संस्कारो में उसको चेंज करें नहीं तो अंत में यह संस्कार चेंज होंगे, संस्कार गर्मी से चेंज से होंगे ना? या तो योग कि गर्मी से नहीं तो

विनाश कि गर्मी से, बड़े कष्ट दायक होंगे तब। चेंज तो होना है, अपने देव स्वरुप में सब को पहोंचना है पहले कोई सॉफ्ट हो जाएँ सुखी हो जायेंगे लम्बा काल नहीं हुए तो अंत में विनाश कि ज्वाला उन संस्कारो को जला कर नरम करेगी। हम सोच लें हमें क्या करना है।

तीसरी इम्पोर्टेन्ट बात पर ध्यान दें **संगमयुग श्रेस्ठ बुद्धि के निर्माण करने का भी युग है।** बुद्धि जो सब से सुंदर सम्पति है मनुष्य कि, सब से सुंदर कहेंगे पहला नंबर जो जन्म जन्म मनुष्य के साथ चलती है, जैसे जिसकी बुद्धि वैसा ही उसका भविष्य आज भी हम देखते है ना? विध्यार्थी काल में ही जैसी जिसकी बुद्धि रही वैसा उसका भविष्य हो गया। हम बुद्दि का निर्माण कर रहे है। और बुद्दि का निर्माण होता है किससे? बाबा से तो होता ही, बाबा ने क्या दिया इसके लिए? श्रेस्ठ ज्ञान। ज्ञान का चिंतन और ज्ञान का दान, बुद्धि कि विवेक शक्ति का विकास करता है। गहराई में जायेंगे तो घभराहट दूर हो जायेगी और गहराई में होता है बहोत माल, सागर में गहराई में हीरे रत्न मिलते है ना? ज्ञान कि गहराई में जाना, हर घटना को गुह्यता कि दृस्टि से निहारना, घभराहट क्या क्यूँ सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

बुद्धि का निर्माण दूसरा जो आप सब ने बताया **बुद्धि स्वच्छ दिव्य होती है योग से।** तो ज्ञान कि शक्ति से हम विवेक शक्ति को बढ़ाएं योग कि शक्ति से बुद्धि को दिव्य बनाएं यह बुद्धि जन्म जन्म हमारे साथ चलेगी। बहोत सूक्ष्म विषय है यह बुद्धि को श्रेस्ठ बनाना। इसलिए बाबा कि मुरलियों में हम हमेशा सुनते है बुद्धि को क्लीन और क्लियर। क्लीन करना बहोत आवश्यक है, सफाई करना बुद्धि कि, जो बहोत सारी गंदकी हमने भर ली है जन्म जन्म उस गंदकी से जो वंस पैदा हो रहे है जो कष्ट दे रहे है मनुष्य को उसकी सफाई करेंगे। तो अपनी बुद्धि अपने लिए बड़ी सुखदाई हो जायेगी, आजकल के मनुष्यों कि बुद्धि उनके लिए दुखदाई हो गई है, जो जितना बुद्धिमान वोह उतना ही परेशान नजर आता है। एवरेज बुद्धि वाले, जिनको मध्यम तरह कि बुद्धि है वोह सुखी दिखाई दे रहे है वोह ज्यादा नहीं सोचते, जो बहोत बुद्धिमान है बहोत सोचते है, हर चीज को अनलाइस करते है, परेशान हो उठते है। इसलिए माताएं ज्यादा नहीं सोचती, नहीं सोचना है सोच के करेंगे क्या?

ध्यान दें हम अगली बात पर संगमयुग श्रेस्ठ स्पिरिचुअल एनर्जी, ईश्वरीय शक्तियां भरने का युग है। जो भी आप मेसे चाहे इसको लक्ष्य बना लें ईश्वरीय शक्तियों से स्वयं को संपन्न करना है, येही शक्तियां जन्म जन्म हमारे साथ चलेगी, येही शक्तियां वर्त्तमान में भी चाहे हम सेवा में है तो सेवाओं कि सफलता का आधार है, लौकिक में है लौकिक कार्यो कि सफलता का आधार है, शारीर को स्वस्थ रखने का आधार है, विघ्नो को समाप्त करने का भी आधार है। संसार में बुद्धिमानो को भी यह पता नहीं है कि ज्यादा सोचने से व्यर्थ सोचने से, व्यर्थ बोलने से वोह अपनी शक्तियां नष्ट कर रहे है। आप चारो और देखें दुनिया में लोग को सारा दिन लगे हुए है बातें करने में कुछ भी, कभी राजनीति कि बातें, कभी फिल्मो वालों कि बातें तो कभी कोई और दुनियावी घटनाओ कि चर्चाएं सारा दिन लम्बा काल उसपे दे रहे है, छोटी सी बात में घंटो बिता रहा है। यह भूल गया है कि इससे शक्तियां नष्ट हो रही है। हम सब ध्यान दें जिनके पास ज्ञान है वोह ध्यान दें योग से हम शक्तियां जमा करते है ऐसे तो नहीं कि नष्ट हो रही है। एक बात में ही बहोत देर हम बुद्धि चलते है, बहोत चर्चाएं करते है और हमारी सूक्ष्म शक्तियां नष्ट होती जा रही है। क्यूंकि इस शक्तियों को यदि हम नष्ट करेंगे तो सफलता का मार्ग कठिन हो जाएगा, लौकिक में भी जो भी कार्य हम कर रहे है उसमें अनेक विघ्न आते रहेंगे और यदि हमारे पास शक्तियां बहोत होंगी तो विघ्न नष्ट होंगे हर जगह हमें सफलता प्राप्त होगी।

इसलिए **सभी अपनी यह आदत बनाएं बातों को जल्दी से ख़त्म करना। बढ़ाना नहीं है, बातें तो रोज आती है, फटाफट आगे बढ़ते चलें।** हम यात्रा पर है वैसे भी हम चलते है तो सीन छूटते जाते है रुकते है तो उसी समय चारो और जो हो रहा है उसका प्रभाव हम पर आने लगता है, हम चलते चलें रुके नहीं। सीन पीछे छूटते जायेंगे हर चीज हर शान बदल रही है, बाबा ने ड्रामा के बारें में अति गुह्यता हमारे सामने राखी है एक अति गुह्य बात है - जो इस ड्रामा में एक बार हो

गया वोह दोबारा नहीं होता, उसे रिपीट होना है तो पांच हजार साल ही चाहिए। इस बात को समजते हुए हम बातों को जल्दी जल्दी छोड़ते चलें। किसी बात को हम पकड़ते है, उसके विस्तार में जाते है तो हमारी शक्तियां नष्ट होती है, आप करके देखेंगे यह प्रयोग। जो भी बात आपके सामने आ रही है, उसको थोडा हल्का कर के, चाहे किसी ने आपकी ग्लानि कि है, चाहे कोई टेंसन कि बात है उसको जरा हल्का करके अपनी अच्छी स्थिति में रहो तो बात समाप्त हो जायेगी।

पिछली बार भी हमने चर्चा कि थी बहोत ही अच्छी चिंतन कि बात है क्यूंकि मनुष्य पर सब से अधिक इफ़ेक्ट होता है दुसरो के बुरे शब्दो का, होता है ना? कोई अपमान करें, कोई निंदा करें, कोई बोलता ही रहे व्यर्थ कि बातें हमारे बारें में सुनाता ही रहे, प्रचार करता रहे तो बातों का इफ़ेक्ट मनुष्य के ऊपर बहोत होता है जरा सूक्ष्मता से दृस्टि ड़ाल लें - **हम दुसरो के शब्दो पर ज्यादा धान देते है हमें ध्यान देना चाहिए बाबा के शब्दों पर।** मानलो हमारी कोई निंदा कर रहा है, ज्यादा कर रहा है हम उस पर ज्यादा ध्यान देते है ना? हम बाबा के शब्दो पर ध्यान दें बाबा ने कहा ज्ञानी तू आत्मा वोह जो निंदा स्तुति हार जित में सामान रहें। यह याद आते ही दूसरे कि निंदा का प्रभाव ढीला हो जायेगा, यह उनका काम है निंदा करना और हमारा काम है वोह करना जो भगवान् ने कहा है।

तो दुसरो के शब्दो पर ध्यान ना देकर ध्यान तो जाएगा लेकिन जल्दी उसको लाइट करके, हल्का करके हम बाबा के शब्दो पर ध्यान देंगे तो हमें बहोत शक्तियां मिल जायेगी। अगर हमें ज्यादा सोचने कि आदत है पीछे एक मारवाड़ी परिवार आया मिलने मेने ऐसे ही पुछलिया माताएं थी तिन तो सभी माताएं सुखी है? तो दो माताएं तीसरी के लिए बोलने लगी कि बहोत सोचती है। वोह भी हंसने लगी एक ही परिवार कि थी मुझे बताया कि अगर मुझे सवेरे को कोई एक बात केह जाएँ तो सारा दिन मेरा वही चिंतन चलता है। कभी भी कोई मुझे दो शब्द बोल जाएँ बस खेल पूरा हो गया मेरी शांति गई, आपे ही वोह बता रही है। यह भी अच्छी बात है कि उसको अपनी कमजोरी का ज्ञान था। मेने उसको याद दिलाया कि दूसरा व्यक्ति आपको दो बात कहके बहोत खुश होता होगा? कहा हाँ वोह तो उधर ख़ुशी मानते है में इधर मूड ऑफ़ करके बैठ जाती हूँ। मेने कहा बस येही सोचलो कि कहने वाला खुश तो सुनने वाले भी खुश।

जब तक अपने विचारो को विशाल बनाएं कि जब कहने वाला हल्का हो गया है, किसी ने दस दिन से अपने मन में रखी थी कोई बात के मौका मिलते ही इन्हे सुनाऊंगा उसने अपनी बात केह ही वोह तो हलके और हम हो गए गरम। थोडा सा अपने को जरा सावधान करें हमारी शक्तियां नष्ट हो रही है, इनका ही प्रभाव हेल्थ पर आ रहा है। किसी को हाई ब्लड प्रेशर आ रहा है, शुगर बढ़ रही हा, किसी का हार्ट पर प्रेशर आ रहा है क्यूंकि यह सोचते सोचते मन कि शक्तियां शीण होती जाती है उसका नेगेटिव प्रभाव हर एक कि हेल्थ पर पड़ता रहता है। इसीलिए जरा इन सब से बहार निकल जाएँ।

बातें होती रहेगी, हम जिस युग में गुजर रहे है उसमें ऐसा हो सकता है कि बातें ना आयें? बातें तो आएँगी जाएंगी। तो जाने दो, जाने दो उनको हल्का करें अपने को और लक्ष्य बना लें हमें ईश्वरीय शक्तियों से स्वयं को भरना है येही शक्तियां हमारे काम आएँगी। आजकल देश भी तो सोचते है ना? एटॉमिक एनर्जी से स्वयं को संपन्न करलें काम आएँगी बहोत, युद्ध में सब हमसे डरेंगे, कोई हमपे अटॅक नहीं कर पायेगा। हम भी विचार कर लें ईश्वरीय शक्तियों से स्वयं को भरना है, माया अटैक ही नहीं कर पायेगी, विघ्न हमारे सामने थैर ही नहीं पायेगी, सफलता सदा हमारे चरणो में आएगी, कोई भी विघ्न बाधा हमारा मार्ग रोक ही नहीं सकेगी। शक्तियां जमा करें ध्यान दें बहोत बहोत इम्पोर्टेन्ट बात है कि **किसी भी बात के ज्यादा चिंतन से हम शक्तियों को नष्ट ना करें, बातों के प्रभाव को बातों को जितना जल्दी से जल्दी ख़त्म कर दें उतना ही कल्याणकारी रहेगा, पसंद है यह बात सभी को? तो सभी विचार करें हमारा संगमयुग का समय किस तरह बीत रहा है।**

अब आत्म चिंतन कि और सभी चलें, ऐसा तो नहीं जिससे मिलने के लिए युगो से इन्तजार करते थे, सोचते थे कभी भगवान् आजायें इस धरा पर हम यह करेंगे, यह करेंगे उसे भी कहते थे एक बार तुम आजाओ फिर तुमसे अलग नहीं होंगे। एक बार तुम आजाओ फिर तुम जो कहोंगे हम वही करेंगे आप सभी अपने से बात करें जब ऐसा सुंदर भाग्य हमारे द्वार पर आया है जब स्वयं भगवान् हमारा मेहमान बन कर आ गया है, आ गया है ना हर एक के द्वार पर? तो हम सुंदर समय को कैसे व्यतीत कर रहे है? हम ने कहीं स्वयं को उलझा तो नहीं दिया है? बहोत इम्पोर्टेन्ट चिंतन कि बात है मनुष्य के हाथ में है वोह अपने को उलझा दें या सभी उलझनो से ऊपर उठा दें, हाथ में है या दूसरे के हाथ में है? कई दुसरो के हाथ में आ गए है। ग्रहस्त में, कारोबारों कि समस्यायों ने, कुछ पास्ट कर्मो के पाप कर्मो ने, कुछ और समस्यायों ने उलझा दिया है कइयों को।

में केवल यह केह दूँ कि उलझना नहीं है तो इससे तो काम नहीं चलेगा, में आपको यह कहूंगा बाबा ने जो विधि बतायी है इन सब से निकल ने कि उनको यूज करो। जैसे पहली विधि बहोत लोग कहते है प्रैक्टिकल बात है अभी अभी एक माता मिली में सोलह साल से ज्ञान में हूँ, फिर आपे ही बताया लेकिन बिच में समस्याएं आ गयी तो ज्ञान छूट गया। फिर आ गई क्यूंकि रेह तो नहीं सकते थे ईश्वरीय सुख पाया है, भगवान् को इन आँखों से देखा है हजारो बार, मेने कहा कि समस्याएं जब आ जाएं तो समस्यायों का समाधान ज्ञान छोड़ना थोडा ही है, भाई हम मुरली में नहीं आ सकती क्यूंकि समस्याएं बहोत है। थिक करें इसको, मुरली सुनने आयेंगे तो समस्याएं कम हो जायेगी, हम सवेरे नहीं उठ सकते क्यूंकि आजकल बहोत समस्याएं चल रही है, सवेरे उठ कर बाबा से वरदान लेंगे तो समस्याएं ख़त्म हो जायेगी। यह मार्ग क्यूँ ना अपनाएं हम? रियल मार्ग तो यह है ना? मेने बहोत जगह सेंटर्स में देखा है बहने क्या करती है? कोई भी समस्या आयी वोह कुछ नहीं करती, योग भट्ठी चालू करा देती है। समस्या ख़तम हो जाती है, कोई भी बाधा आ गयी, स्टूडेंट्स कि भी आ गयी तो उनके कहती है कुछ नहीं योग में बैठ जाओ फिर बाबा कि मदद मिलती है, कुछ अपनी शक्तियां जागृत हो जाती है, कुछ जो हमारा विवेक समस्यायों ने ढक लिया था वोह जरा बहार आजाता है और हमें उसका यथार्थ समाधान मिल जाता है। समस्यायों को समाधान करें श्रेस्ठ स्वमान से, समस्यायों से बहार निकले।

एक बहोत अच्छा फार्मूला सभी अपनालें मेने पिछली बार भी चार पांच संकल्प दिए थे सब को जीवन को एक लेबोरेटरी बनादें, प्रयोगशाला और इसमें कुछ बातों के प्रयोग करें। एक बहोत सुंदर प्रयोग में दो बातें आपको फिर याद दिल देते हूँ स्व स्थिति से परिस्थियों को थिक करना है। **यह स्वयं भगवान् ने कहा है तुम्हारी स्थिति थिक होगी तो परिस्थियां सुधर जायेगी और तुम्हारी स्थिति बिगड़ी तो परिस्थियां और जटिल हो जायेगी। क्यूंकि यह विघ्न और समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन कि रचना है।** समां लें आप अपने चित में इस बात को हमें स्व स्थिति से ही परिस्थियों को थिक करना है, परिस्थितियां हमें उलझा देगी नहीं तो। परिस्थितियां का जाल ऐसा हो जाता है कि मनुष्य उसमें फंस कर नष्ट हो जाता है उसके सुख शांति, उसका धैर्य, उसका विवेक, उसकी सारी सुंदर धारणाएं बिखर सकती है। सावधानी पूर्वक सभी अपने को जरा शांत करके श्रेस्ठ स्थिति कि और ध्यान दें। कई भाई बेहेने है परिस्थिति आ गयी दो बजे उठना शुरू कर देते है अच्छा योग करते है, थिक है कभी लगेगा कभी नहीं लगेगा युद्ध भी होगा मन में लेकिन हिम्मत नहीं हारते। दो चार दिन में परिस्थिति समाप्त हो जाती है। अच्छे प्लान करेंगे सभी।

दूसरी प्रयोग कि बात जो बिलकुल सिंपल है और जिसके अनेक सुंदर अनुभव सब को करने है, इस साल का ही महावाक्य है - जो बच्चे मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहते है विघ्न और समस्याएं उनके पास आ नहीं सकती। बहोत अभ्यास कर दें में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, सेवाओं के फील्ड में, लौकिक कार्यो में, अपने परिवार में आप देखेंगे समस्याएं नष्ट होने लगेगी। यह दो बात मेने आपको कही एक ही बात है यह दोनों भी क्यूंकि श्रेस्ठ स्थिति का आधार

भी स्वमान है। श्रेस्ठ स्वमान माना श्रेस्ठ स्थिति। में एक महान आत्मा हूँ इस स्वमान को हम ले लें स्थिति महान होने लगेगी, में इष्ट देवी हूँ इस स्वमान को ले लें स्थिति सुंदर होने लगेगी।

तो सभी कहीं भी स्वयं को उलझाएं नहीं, ध्यान दें संगमयुग बहोत बहोत कीमती समय है। याद है बाबा के महावाक्य एक मिनट एक वर्ष के बराबर है। कहीं भी यदि हम देखें कि यहाँ उलझन है तो अलग हो जाएँ, उलझनो में उलझ कर अपनी स्थिति को बिगाड़ लेना यह बुद्धिमानी नहीं है, थिक बात है या नहीं? सेवा में भी हम कहीं देखें कि यहाँ बहोत उलझन है थोडासा न्यारे हो जाएँ। में ही यह सेवा करूँ भले ही उलझ जाऊं, यह बुद्धिमानी नहीं है, सभी ध्यान दें संगमयुग का सुंदर समय हम कैसे बिता रहे है, हमने कहीं अपने को उलझा तो नहीं दिया है? काम धंधो के विस्तार में भी तो नहीं उलझा दिया है? अपने को समेट लें इससे। सुंदर समय है बाबा ने इस बार जो बोला था याद है? बाप समय कि चेतावनी बार बार दे रहे है इसको कॉमन बात नहीं समजना, हमें कॉमन बात समज ने कि आदत पड़ गयी है ना? बाबा तो कहता ही रहता है हम भगवान् को भी नहीं समज पा रहे है कि वोह तो कहता ही रहता है जैसे वोह झूठ बोल रहा हो, जो परम सत्य है वोह कभी असत्य बोलेगा? वोह वही चीज बोलता है जिसमें हमारा सम्पूर्ण कल्याण हो, वोह टीचर भी है ना? एक टीचर जानता है मेरे स्टूडेंट्स अच्छे मार्क्स कैसे लायेंगे उसी तरीके को यूज करता है ना? वोह सद्गुरु भी है वोह बहोत अच्छी तरह जानता है मुझे इन्हे किस किस तरह गाइडेंस देनी है, वोह पिता भी है तो प्यार भी अपने सम्पूर्ण रूप से रखता है।

तो हम समय कि चेतावनी को कॉमन नहीं समझेंगे इसलिए जो बुद्धिमान आत्माएं है उन्हें चाहिए संगमयुग पर स्वयं को कहीं भी उलझाएं नहीं, अगर उलझ गए हो तो आराम से निकल जाएँ। निकलना भी अपने हाथ में है, कुछ लॉस भी करना पड़े, कुछ सुनना भी पड़े, लगे थोडा सा कुछ खो दिया है हमने तो हर्जा नहीं। बहार निकल कर ईश्वरीय सुख से ईश्वरीय शक्तियों से अपनी झोली भरेंगे तो बहोत आनंद आएगा, आत्म संतोष होगा कि भगवान् हमें मिला हमने उसे पहचाना, हमने उसे अपना बनाया तो सब कुछ मिल गया हम संतुष्ट हुए। ऐसा ना हो कि जब संगम बीते तो हमारे दिल से आवाज़ निकले कि संतुष्ट नहीं हुए, मजा नहीं आया जीवन में। यह शब्द हमारे ना हो, हमारे शब्द हो कि जीवन आनंदो से गुजरा बाबा से जो कुछ लेना चाहिए था हमने वोह सब कुछ ले लिया और सबको खुले हाथ बांटते रहे।

-: ओम शांति :-

-: क्लास के चुने हुए पॉइंट्स :-

- ✓ बच्चे अपने भाग्य को देखो भगवान् तुम्हारी मुट्ठी में आगया है, ब्रह्मा बाबा का अपना नशा भी था यह ।
- ✓ हम अपने जीवन का लक्ष्य बना लें ८४ जन्म हमने भिन्न भिन्न रसो में, भिन्न भिन्न सुखो का सीधा या उल्टा अनुभव करते हुए व्यतीत किया है अब केवल ईश्वरीय सुख लेना है।
- ✓ कोई भी रस आत्मा को खिंच ने लगा चाहे वोह खाने का रस हो, चाहे आजकल टीवी देखने का रस हो, चाहे इधर उधर कि किताबे पढ़ने का रस हो, बोलने का रस हो तो ईश्वरीय रस चला गया।
- ✓ बाबा ने तो हम सब को यज्ञ रच कर हाथ में दे दिया है ना? इस यज्ञ से तुम अपना पुण्य भी जमा करो और संसार का भी कल्याण करो।
- ✓ यज्ञ तुम्हे मन इच्छित फल प्रदान करने वाला है। इससे एक और विनाश ज्वाला प्रगट होगी दूसरी और सारे संसार के विकारो कि, पापो कि आहुति उस में पड़ जायेगी दोनों काम हम सब को करने है।
- ✓ दुसरो को सुख देने से पुण्य बढ़ता है सोचलें सभी ८४ जन्मो के लिए ही श्रेस्ठ भाग्य का निर्माण कर लेना है। केवल २१ जन्म के लिए नहीं क्यूंकि जो संस्कार हम यहाँ अपना लेंगे वोह हमारे द्वापर से भी चालू रहेंगे।
- ✓ दुसरो को सुख देने के लिए यदि थोडा कष्ट उठाना पड़े तो कोई हर्जा नहीं है ।
- ✓ दुखी मनुष्य अपने संस्कारो से है। बहोत लोगो को आप देख सकते है जो लोग दुसरो कि बहोत ग्लानि करते है, अगर कोई उनकी ग्लानि कर दें तो सहन नहीं होता। वोह दुसरो को बहोत कड़वा बोलते है उन्हें कोई कड़वा बोल दें सहन नहीं होता क्यूंकि उनकी सारी शक्ति उसमें नष्ट हो जाती है।
- ✓ संगमयुग श्रेस्ठ बुद्धि के निर्माण करने का भी युग है। बुद्धि स्वच्छ दिव्य होती है योग से।
- ✓ सभी अपनी यह आदत बनाएं बातों को जल्दी से ख़त्म करना। बढ़ाना नहीं है, बातें तो रोज आती है, फटाफट आगे बढ़ते चलें।
- ✓ हम दुसरो के शब्दो पर ज्यादा धान देते है हमें ध्यान देना चाहिए बाबा के शब्दों पर।
- ✓ किसी भी बात के ज्यादा चिंतन से हम शक्तियों को नष्ट ना करें, बातों के प्रभाव को बातों को जितना जल्दी से जल्दी ख़त्म कर दें उतना ही कल्याणकारी रहेगा, पसंद है यह बात सभी को? तो सभी विचार करें हमारा संगमयुग का समय किस तरह बीत रहा है।
- ✓ यह स्वयं भगवान् ने कहा है तुम्हारी स्थिति थिक होगी तो परिस्थियां सुधर जायेगी और तुम्हारी स्थिति बिगड़ी तो परिस्थियां और जटिल हो जायेगी। क्यूंकि यह विघ्न और समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन कि रचना है।
- ✓ जो बच्चे मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहते है विघ्न और समस्याएं उनके पास आ नहीं सकती।